Hammari Apani Virasat

धरोहर प्रेमियों के लिये आर्ट गैलरी

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर भोपाल मण्डल, भोपाल द्वारा **"हमारी अपनी विरासत"** नाम से कमलापति महल भोपाल में आर्ट गैलरी का शुभारंभ किया जा रहा है।

भोपाल के बड़े व छोटे तालाब के बीच बने बांध पर निर्मित गोंड कालीन कमलापति महल, जो 17वीं–18वीं शताब्दी का है, इस तरह की सांस्कृतिक गतिविधयों के लिये पूर्णतः अनुकूल है। हाल ही में इस स्मारक को कम से कम हस्तक्षेप करके संरक्षित किया गया है एवं भूतल पर एक व्याख्या केन्द्र भी खोला गया है।

इस स्थल पर जनता के लिये आर्ट गैलरी खोलने का प्रमुख उद्देश्य धरोहर/ ऐतिहासिक स्थल पर इससे जुड़े ऐसे लोगों को अपनी कला के प्रदर्शन के लिये जगह उपलब्ध कराना है जो किसी भी आर्ट गैलरी को ऊँचें किराये पर लेने में सक्षम नहीं है। अतः हम सभी विद्यार्थियों, विद्वानों, संस्थानों, सिक्कों एवं टिकट संग्रहकर्ताओं, कलात्मक वस्तुओं के पारखीजनों एवं आम जनता आदि को अपनी कला के प्रदर्शन के लिये कम दामों पर स्थल के अन्दर एवं बाहर के क्षेत्र का उपयोग करने के लिये आमंत्रित करते हैं। इससे उनके कला–कौशल का प्रदर्शन होगा एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को धरोहर के संरक्षक के रूप में पहचान भी मिलेगी।

एन. ताहेर
भा.पु.स., भोपाल मण्डल

हमारी अपनी विरासत

Art Gallery

For Heritage Enthusiasts

On the occasion of 150th Anniversary of Archaeological Survey of India, the Bhopal Circle is inaugurating an Art Gallery titled ***'Hammari Apani Virasat'*** *at Kamlapati Mahal, Bhopal.*

Kamlapati Mahal belonging to the Gond Period i.e. of 17th-18th century is perched on a bund between the bada and chota talab, is an ideal location for promoting such cultural activities under the concept of Adaptive use of Heritage. The site has been recently conserved by adopting the concept of minimum intervention module which also houses an interpretation center In the ground floor.

The intention of opening the site to the community is to offer Heritage Precincts to heritage enthusiasts who otherwise cannot afford to hire galleries at exorbitant rates to put up their creations. Hence we invite students, individual scholars, institution and general public, coins and stamps collectors, connoisseurs of art object etc. to utilize the premises both indoor and outdoor at minimum cost to display their creation. This would showcase their talent and also give mileage to Archaeological Survey of India as a custodian of heritage.

N. Taher
Bhopal Circle
ASI